Krishna Nand B.Ed. Hazy - II

प्रश्न → मन के गत्यात्मक पहलुओं का वर्णन करें।

Ans → फ्रॉयड (Freud) ने अपने अनुभवों के आधार पर मानव व्यवहार की व्याख्या के लिए 'मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (Psychoanalytic approach) प्रस्तुत किया है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत इन्होंने मन के विभिन्न पहलुओं (different aspects of mind) की चर्चा की है तथा बताया है कि मन के दो पहलू होते हैं।

(A) गत्यात्मक पहलू (dynamic aspect)

(B) आकारात्मक पहलू (Topographical aspect)

मन के गत्यात्मक पहलू – फ्रॉयड ने मन के गत्यात्मक पहलू के अन्तर्गत उन प्रतिनिधियों की चर्चा की है, जिनके द्वारा मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न संघर्षों का समाधान किया जाता है। ये प्रतिनिधि क्रमशः उपाहं (Id) अहं (Ego) एवं परहं (Superego) हैं। ये तीनों प्रतिनिधि परस्पर विरोधी हैं। एक सामान्य व्यक्तित्व के इन तीनों प्रतिनिधियों के बीच सामंजस्य-युक्त-संतुलन रहता है। लेकिन जब इनके बीच का संतुलन बिगड़ जाता है तब व्यक्तित्व [illegible] असंतुलित हो जाता है और व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार हो जाता है।

Krishna Nand B.A I Hon's ②

उपाहं, अहं और पराहं की विशेषताएँ → मन के गत्यात्मक पहलुओं के तीनों प्रतिनिधियों की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

① उपाहं → उपाहं मन के गत्यात्मक पहलू का पहला प्रतिनिधि है जो पूर्णतः अचेतन होता है। अतः इसकी विशेषताओं को समझना कठिन है। लेकिन जब हम छोटे शिशुओं की स्वाभाविक विशेषताओं पर ध्यान देंगे, तो उपाहं की प्रमुख विशेषताओं को समझना बिल्कुल आसान हो जायेगा। क्योंकि नवजात शिशुओं में केवल उपाँह की प्रवृत्तियों की भरमार रहती है।

उपाहं की विशेषताएँ → Characteristics of Id)

Ⓐ उपाहं जीवन और मृत्यु की मूल प्रवृत्तियों का भंडार है। → उपाहं हर प्रकार की मनोजैविक इच्छाओं की जननी है। इन इच्छाओं के प्रेरक जीवन और मृत्यु की मूल प्रवृत्ति है। जो हर प्रकार की रचनात्मक एवं विध्वंसकारी क्रियाओं को उत्पन्न करती है। चूँकि शिशुओं में अहं एवं पराहं का विकास बाद में होता है। इसलिए उनमें केवल उपाहं की प्रवृत्तियाँ ही पाई जाती हैं। यही कारण है कि छोटी उम्र के बच्चे खिलौनों के साथ खेलने के क्रम में उन्हें कभी प्यार से चूमते हैं और कभी उन्हें पटक कर तोड़ते हैं।

Ⓑ उपाहं सुख के नियम से संचालित होता है → उपाहं आनंद या सुख के नियम से संचालित होता है। अतः जिन क्रियाओं से सुख प्राप्ति करने की उम्मीद होती है, उपाहं उन्हीं क्रियाओं को करना चाहता है। यह विशेषता भी बच्चों में सामान्य तौर पर पाई जाती है।

Ⓒ उपाहं का संबंध वास्तविकता से नहीं रहता है → जिस प्रकार बच्चों को जीवन की वास्तविकता परिस्थिति का ज्ञान नहीं रहता, उसी प्रकार, उपाहं का वास्तविकता से कोई संबंध नहीं रहता है। उपाहं तो वास्तविक परिस्थितियों का बिना कोई विचार किए केवल इच्छाओं को उत्पन्न करना और उसकी तुष्टि चाहता है।